हिन्दी त्रैमासिक ई-पत्रिका
लेखापरीक्षा ज्ञानोदय
चौदहवां संस्करण

हिंदी पखवाड़ा समारोह विशेषांक

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा मुंबई,
सी 25, 8 वी मंजिल, ऑडिट भवन, बीकेसी, बांद्रा पूर्व, मुंबई – 400 051
टेलीफ़ोन नं.- 022-69403800, ई-मेल pdcamumbai@cag.gov.in

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

प्रिय देशवासियो!

आप सब को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत भाषिक विविधता का देश रहा है। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की भाषिक विविधता को एकता के सूत्र में पिरोने का नाम **'हिंदी'** है। हिंदी भाषा अपनी प्रवृत्ति से ही इतनी जनतांत्रिक रही है कि इसने भारतीय भाषाओं और बोलियों के साथ–साथ कई वैश्विक भाषाओं को यथोचित सम्मान देते हुए उनकी शब्दावलियों, पदों, वाक्य विन्यासों और वैयाकरणिक नियमों को आत्मसात किया है।

हिंदी भाषा ने स्वतंत्रता आन्दोलन के मुश्किल दिनों में देश को एकता के सूत्र में बाँधने का अभूतपूर्व कार्य किया। अनेक भाषाओं और बोलियों में बँटे देश में ऐक्य भावना से पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता की लड़ाई को आगे बढ़ाने में संवाद भाषा हिंदी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। इसीलिए, लोकमान्य तिलक हों, महात्मा गांधी हों, लाला लाजपत राय हों, नेताजी सुभाषचंद्र बोस हों, राजगोपालाचारी हों; हिंदी के शुरुआती पैरवीकारों में बहुसंख्यक उन प्रदेशों के लोग थे, जिनकी मातृभाषाएँ हिंदी नहीं थीं।

किसी भी देश की मौलिक सोच और सृजनात्मक अभिव्यक्ति सही मायनों में सिर्फ उस देश की अपनी भाषा में ही की जा सकती है। प्रसिद्ध साहित्यकार भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने लिखा है कि, **"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।"** यानि कि, अपनी भाषा की उन्नति ही सभी प्रकार की उन्नति का मूल है। राष्ट्र की पहचान इस बात से भी होती है कि उसने अपनी भाषा को किस सीमा तक मजबूत, व्यापक एवं समृद्ध बनाया है। यही कारण है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी और लिपि के रूप में देवनागरी को अपनाया।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं को राष्ट्रीय से वैश्विक मंचों तक यथोचित सम्मान मिला है। हमारी सभी भारतीय भाषाएँ और बोलियाँ हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं।

अपनी भाषा में सुनी हुई अवांछनीय बातें भी बहुत बुरी नहीं लगती। कवि **विद्यापति** की शब्दावली में कहूँ तो **'देसिल बयना सब जन मिट्ठा'** यानि देशी भाषा सभी जनों को मीठी लगती है। गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयत्नशील है कि शहद सामान मीठी भारतीय भाषाओं को आधुनिक तकनीक के माध्यम से अत्याधुनिक और वैज्ञानिक प्रयोग के अनुकूल उपयोगी बनाया जा सके।

सरकार और जनता के बीच भारतीय भाषाओं में संवाद स्थापित कर जनकल्याणकारी योजनाओं को प्रभावी तौर पर लागू किया जा सकता है। दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र जन–जन तक उनकी ही भाषा में उनके हित की बात पहुँचाकर आदर्श लोकतंत्र के निर्माण का सबसे अच्छा उदाहरण हो सकता है। राजभाषा विभाग ने इसी उद्देश्य से राजभाषा हिंदी के प्रयोग को सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से सहज बनाने की दिशा में काम करते हुए स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली **'कंठस्थ'** का निर्माण और विकास किया है। फिजी में संपन्न 'विश्व हिंदी सम्मेलन' में **'न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन'** के साथ इसके नए वर्जन (कंठस्थ 2.0) के मोबाइल ऐप का भी लोकार्पण भी किया गया है।

राजभाषा विभाग की एक नई पहल **'हिंदी शब्द सिंधु'** शब्दकोश का निर्माण है। इस शब्दकोश में संविधान की 8वीं अनुसूची में अधिसूचित भारतीय भाषाओं के शब्दों को शामिल कर इसे निरंतर समृद्ध किया जा रहा है। साथ ही, विभाग ने **'लीला हिंदी प्रवाह'** मोबाइल ऐप भी तैयार किया है, जिसे अपनाकर विभिन्न भाषा–भाषी 14 भारतीय भाषाओं के माध्यम से अपनी–अपनी मातृभाषाओं से स्तरीय हिंदी निःशुल्क सीख सकते हैं।

भाषा परिवर्तन का सिद्धांत यह कहता है कि भाषा जटिलता से सरलता की ओर जाती है। मेरे विचार से हिंदी के सरल और सुस्पष्ट शब्दों को कार्यालयी कामकाज में प्रयोग में लाना चाहिए। टिप्पणी, पत्राचार, ई–मेल, विज्ञप्ति आदि के लिए आम बोलचाल के शब्दों व वाक्यों के प्रयोग से हिंदी के प्रयोग का चलन बढ़ेगा।

हमारे लिए हिंदी का प्रश्न सिर्फ एक भाषा का प्रश्न नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्वाभिमान व सांस्कृतिक गौरव का विषय है। मुझे विश्वास है कि राजभाषा विभाग के उपरोक्त प्रयासों से सभी मातृभाषाओं को आत्मसात करते हुए लोकसम्मत भाषा हिंदी विज्ञानसम्मत व तकनीकसम्मत होकर संपन्न राजभाषा के रूप में स्थापित होगी।

पुनश्च, आप सब को हिंदी दिवस की अनंत शुभकामनाएं।

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2023

(अमित शाह)

लेखापरीक्षा ज्ञानोदय परिवार

मुख्य संरक्षक

डॉ संदीप रॉय

महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा

संरक्षक

मो. फैजान नय्यर, निदेशक/तेल

श्री सागर काळे, उप निदेशक/मुख्यालय

संपादक-मंडल

श्रीमती स्वपना फुलपाड़िया	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
श्रीमती मीना देशप्रभु	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
श्रीमती विद्या मुरलीधरन	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
श्रीमती कल्पना असगेकर	सहायक पर्यवेक्षक
सुश्री पूजा साव	कनिष्ठ अनुवादक
श्री अरुण कुमार साव	कनिष्ठ अनुवादक
सुश्री प्रियंका त्रिवेदी	कनिष्ठ अनुवादक

(रचनाओं की मौलिकता एवं विचार से संबंधित पूर्ण उत्तरदायित्व रचनाकारों का है-संपादक मंडल)

अनुक्रमणिका	
संदेश	डॉ संदीप रॉय, महानिदेशक
संदेश	मो. फैजान नय्यर, निदेशक/तेल
संदेश	श्री सागर काळे, उप निदेशक/मुख्यालय
संदेश	श्री अनुपम जाखड़, उपनिदेशक
संपादकीय	सुश्री पूजा साव
लेखापरीक्षक	श्रीमती स्वपना फुलपाड़िया
पर्वतारोहण	श्रीमती सुवर्णा विचारे
स्वास्थ और स्वच्छता	श्री संजय कोटलगी
चार मुक्तक	श्री जयराम सिंह
स्वाभूतानन्दी हूं	सुश्री पूजा साव
जलवायु परिवर्तन	सुश्री पूजा साव
शिक्षा का महत्व	श्री अरुण कुमार साव
चिरशान्ति!	सुश्री प्रियंका त्रिवेदी
तेरी ना, नही	इमरान खाटीक
हिंदी पखवाड़ा आयोजन	
आपके पत्र	

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि कार्यालय द्वारा तिमाही हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 14वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को गति प्रदान करने तथा अपनी राजभाषा के लिए गौरवपूर्ण वातावरण तैयार करने में कार्यालयीन पत्रिकाओं का काफी योगदान होता है।

भारतीय संविधान द्वारा राजभाषा के रूप में मान्यता प्राप्त हिंदी के प्रति हम सभी का यह दायित्व है कि कार्यालयीन कार्यों में हिंदी का प्रयोग करने के साथ-साथ इसके प्रचार-प्रसार हेतु यथासंभव प्रयास करें। हिंदी का स्वरूप कठिन तथा जटिल तब हो जाता है जब हिंदी में मूल कार्य न करके अनुवाद का प्रयोग किया जाता है। अतः कार्यालय में अन्य भाषाओं के सहज एवं प्रचलित शब्दों का भी प्रयोग करना चाहिए जिससे यह प्रत्येक व्यक्ति के मन तक अपनी पहुंच बना सके। सभी कार्मिकों को राजभाषा हिंदी के विकास हेतु अपना यथासंभव योगदान देना चाहिए।

अंत में मैं उन सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को धन्यवाद देता हूं जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से पत्रिका के 14वें अंक को सफल बनाने में सहयोग किया है। प्राप्त रचनाओं के सुंदर प्रस्तुतीकरण हेतु संपादकीय मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

मुझे आशा है कि हम सभी एक साथ मिलकर पत्रिका के उत्तरोत्तर विकास हेतु सदैव प्रयत्नशील रहेंगे।

(डॉ संदीप रॉय)

महानिदेशक

कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई

संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि कार्यालय द्वारा त्रैमासिक हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 14वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। कार्यालय द्वारा हिंदी पत्रिका का समयानुसार निरंतर प्रकाशन कार्यालय के राजभाषा के विकास में योगदान को प्रदर्शित करता है। पत्रिकाओं का प्रकाशन राजभाषा में कार्य करने हेतु प्रोत्साहित करने की दिशा में किए जा रहे कार्यों में से एक है जिसकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

केंद्र सरकार के सभी कार्मिकों का यह कर्तव्य है कि वे राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने तथा प्रयोग के लिए प्रोत्साहित करने हेतु यथासंभव प्रयास करें। आज हिंदी का प्रयोग वैश्विक स्तर पर भी बढ़ रहा है। हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है जिसको उसी प्रकार लिखा जाता है जिस प्रकार उसका उच्चारण किया जाता है। विभिन्न भाषा के शब्दों को स्वयं में समाहित करते हुए हिंदी एक संपर्क भाषा के रूप में एक उच्च स्तर पर पहुंच गई है। हमें अपने कार्यालय के काम-काज को यथासंभव राजभाषा में करते हुए इसके विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान देना चाहिए।

मैं कार्यालय के इस कार्य की सराहना करता हूं तथा हिंदी के प्रोत्साहन के लिए लगातार ऐसे प्रयास चलते रहें, ऐसी कामना करता हूं।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादकीय मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

(मो फैजान नय्यर)

निदेशक/तेल

कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई

संदेश

यह प्रसन्नता का विषय है कि कार्यालय राजभाषा हिंदी के विकास में एक और कदम बढ़ाते हुए त्रैमासिक ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 14वें अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में पत्रिकाओं का योगदान महत्वपूर्ण है। पत्रिकाएं अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मन में राजभाषा के प्रति रुचि उत्पन्न करती हैं तथा राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन हेतु जारी निर्देशों से अवगत कराती है।

हिंदी एक सहज भाषा है। कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को सरल बनाने हेतु अन्य भाषा के प्रचलित शब्दों का प्रयोग किया जाना चाहिए। अन्य भाषाओं के प्रचलित शब्दों के प्रयोग से कार्मिकों में रुचि जागृत होती है तथा हिंदी की शब्दावली में भी वृद्धि होती है। आवश्यकतानुसार इलेक्ट्रॉनिक साधनों का प्रयोग करके राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाया जा सकता है। इलेक्ट्रॉनिक साधनों ने राजभाषा हिंदी के प्रयोग को सरल बनाया है। हमारे कार्यलाय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने हेतु पत्रिकाओं के प्रकाशन के साथ-साथ विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। हमारे संयुक्त प्रयासों से राजभाषा हिंदी के विकास हेतु सार्थक परिणाम प्राप्त होंगे।

पत्रिका के इस अंक के सफल प्रकाशन में सहयोग करने वाले समस्त रचनाकारों को धन्यवाद तथा संपादकीय मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

मैं यह आशा करता हूं कि पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" का 14वां अंक आप सभी के लिए रुचिकर एवं ज्ञानप्रद होगा।

(सागर विजय काळे)
उप निदेशक/मुख्यालय
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई

संदेश

मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि कार्यालय द्वारा हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 14वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। यह प्रकाशन कार्यालय के राजभाषा के विकास के प्रति उत्साह को प्रदर्शित करता है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में पत्रिकाओं का प्रकाशन अत्यंत उपयोगी सिद्ध होता है।

कार्यालय के इस कार्य की सराहना करते हुए हिंदी के प्रोत्साहन के लिए लगातार ऐसे प्रयास चलते रहें, ऐसी कामना करता हूं।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादकीय मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

(अनुपम जाखड़)
उप निदेशक
उप कार्यालय निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, देहरादून

संपादकीय

हमारे कार्यालय की त्रैमासिक हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" का चौदहवां अंक आप सभी के समक्ष सादर प्रस्तुत है। यह पत्रिका हम सभी के सम्मिलित प्रयासों का ही परिणाम है। राजभाषा हिंदी के विकास हेतु पत्रिका का प्रकाशन एक सार्थक प्रयास है। पत्रिकाएं कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों में राजभाषा हिंदी के प्रति रुचि जागृत करने के साथ-साथ छुपी हुई सृजनात्मक प्रतिभाओं को उजागार करने के लिए सार्थक सिद्ध होती है।

हिंदी भाषा का प्रयोग राष्ट्रीय स्तर के साथ-साथ अब अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी बढ़ रहा है। हिंदी भाषा में अन्य भाषाओं के शब्दों को ग्रहण करने की अद्भूत क्षमता है जो इस भाषा की सबसे बड़ी शक्ति है। हिंदी का प्रयोग तीव्र गति से बढ़ रहा है तथा हमारे सहयोग के फलस्वरूप राजभाषा को उचित स्थान अवश्य प्राप्त होगा।

सभी उच्च अधिकारियों के प्रति हार्दिक आभार जिनके प्रोत्साहन एवं सहयोग के फलस्वरूप पत्रिका का सफल प्रकाशन किया जा सका है। सभी रचनाकारों को सादर धन्यवाद जिन्होंने अपने रचना कौशल को प्रदर्शित करते हुए अपनी रचनाओं को पत्रिका में शामिल करने हेतु प्रस्तुत किया है। आप सभी से अनुरोध है कि पत्रिका के आगामी अंकों के लिए भी आप अपना सहयोग देते रहें।

आशा है कि पूर्व अंकों की तरह पत्रिका का यह अंक भी पाठकों के लिए रुचिकर एवं ज्ञानवर्धक होगा। पाठकों से हमारा यह विनम्र अनुरोध है कि पत्रिका को पढ़ने के पश्चात अपने अमूल्य विचारों से हमारा उत्साहवर्धन करें तथा अपने विचारों से हमें अवगत कराएं।

पूजा साव

कनिष्ठ अनुवादक

श्रीमती स्वपना फुलपाड़िया

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

लेखापरीक्षक

लेखापरीक्षक, उपलब्धियों की एक जाँच,

लेकिन इसके अलावा कौशल के लिए एक सत्यापन,

बातचीत की कला मेरा कौशल है,

और मेरा अब तक का अनुभव मेरा साथी

इस जादुई कलम के स्वामी के रूप में मैं ही काफी हूँ,

भले ही वे मुझे संतुष्ट पाते हों

या बिना कुछ कहे निराशा के साथ चले जाते हों,

यह केवल प्रमाण है, आप में सुधार करने के लिए बहुत कुछ है।

किसी न किसी तरह, मैं अपने हाथ को रास्ता दिखाती हुई पाती हूँ,

कोमल हरकतों से, एक नाजुक अवलोकन बनाया गया है,

इस प्रकार, एक गहरी साँस, मेरी थकी हुई नसों को शांत करती है, मुझे आराम करने में मदद करती है,

आख़िरकार किसी कठिन कार्य के लिए साफ़ दिमाग़ की आवश्यकता होती है,

और इसलिए, मेरा हाथ धीरे से, धीरे से इस कलम के ढक्कन को बुलाता है,

समय बिना विचलित हुए, आत्मविश्वास से,

यह काम सौंप कर मैं परिणामों की प्रतीक्षा करती हूँ,

इस तरह बनने लगा है

ऑडिट पैरा के निर्माता!

श्रीमती सुवर्णा विचारे
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

पर्वतारोहण

पर्वतारोहण एक गतिविधि है,जिसमें लोग पर्वत श्रृंखलाओं पर चढ़ाई करने के लिए जाते है। यह अत्यंत ही साहसिक और रोमांचक एड्वेन्चर है। पर्वतारोहण के लिये अदम्य साहस की आवश्यकता होती है। बिना साहस के आप इसकी कल्पना भी नही कर सकते है। विश्व के कई पर्वतारोही प्रत्येक वर्ष ही पर्वत श्रृंखलाओं पर चढ़ाई के लिए एक समूह बना कर जाते है। भारत में कई ऐसे पर्वतारोही है, जिन्होंने पर्वतारोहण के क्षेत्र में भारत को गौरवान्वित किया है। भारत की पर्वतारोही अरुणिमा सिन्हा को आज कौन नहीं जानता, वह राष्ट्रीय स्तर की पूर्व वॉलीबॉल खिलाड़ी तथा एवरेस्ट शिखर पर चढ़ने वाली पहली भारतीय दिव्यांग हैं। जिन्होंने एक दुर्घटना में अपनी एक पैर खोने के बाद भी न सिर्फ अदम्य साहस का परिचय दिया है बल्कि एवरेस्ट पर पहुंच कर विश्व रिकोर्ड भी बनाया। आज के नवयुवक और नवयुवतियों के लिए वह एक प्रेरणा है। सोहनलाल द्विवेदी की एक पंक्ति मुझे याद आ रही है कि-

“जब तक न सफल हो नींद चैन को त्यागो तुम,
संघर्ष का मैदान छोड़कर मत भागो तुम।
कुछ किये बिना ही जय-जयकार नही होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।“

एक मनुष्य के अंदर बस चाह होनी चाहिए और उस चाह (लक्ष्य) को पूर्ण करने के लिए सतत प्रयास होनी चाहिए। अब मैं आप सभी पाठकों के समक्ष अपनी जीवन की एक छोटी-सा अनुभव को साझा करने जा रही हूँ। यह अनुभव मेरे शीर्षक से ही संबंधित है। वह साल था 1996 का और अगस्त का महीना, जब मैं 3 महीने की गर्भवती थी। उस समय मेरे पेट के चारो तरफ एक अजीब प्रकार की ऐठन (क्रैम्प) आती थी। वो दर्द केवल एक महिला ही समझ सकती है, जिसने कभी इस प्रकार के दर्द को महसूस किया हो। मेरे लिए वो दर्द असहनीय होता था। डॉक्टर ने मुझे बेड रेस्ट की सलाह दी थी। उन्ही दिनों मेरे पति ने अपने कुछ 15-20 मित्रों के साथ चंद्रभागा 13 (हिमाचल प्रदेश) में पर्वतारोहण की योजना बनाई। चंद्रभागा 13 सबसे आकर्षक हिमालयी महान चढ़ाई वाली चोटियों में से एक है। मेरे पति ने मुझे भी समूह में शामिल होने के लिए प्रस्ताव दिया। इस परिस्थिति में चढाई करना तो काफी मुश्किल है और डॉक्टर ने भी पूर्ण आराम की सलाह दी थी। लेकिन मुझे मेरे पति के साथ इस ट्रिप में जाने का पूरा मन था। परिवार के लोग भी इसकी अनुमति नहीं दे रहे थे और इसके खिलाफ थे। मेरे पति के जिद्द के आगे किसी की भी एक न चली और परिणामस्वरूप मुझे इस ट्रिप में जाने का मौका मिल गया। ईश्वर को स्मरण कर हिमाचल प्रदेश के लिए हम सभी अपनी यात्रा को आरम्भ करते है। मेरे मन में एक डर भी रहता है कि कहीं कोई अनहोनी न हो जाए। फिर सहसा मेरे मन में एक उक्ति याद आती है कि -

“होइहि सोइ जो राम रचि राखा। को करि तर्क बढ़ावै साखा “

पर्वतारोहण के लिए शारीरिक स्वस्थ होना अत्यंत आवश्यक होता है और चढ़ाई से पहले अच्छे से शारीरिक जाँच होती है। उच्च रक्तचाप वाले व्यक्तियों और उन व्यक्तियों को जिन्हें श्वसन संबंधित समस्या हो चढाई करने से बचना चाहिए क्योंकि जैसे-जैसे हम ऊपर की ओर बढ़ते है तो ऑक्सीजन का स्तर कम होता जाता है। हम मनाली पहुंचते है और मनाली के हरिपुर में एक बगीचे में स्थित बेस कैंप रात में रुकें। सीबी 13 तक पहुंचने का रास्ता बटाल से शुरू होता है। घाटी के पार विशाल बारा शिगरी ग्लेशियर को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। बेस कैंप एक ग्लेशियर से थोड़ा ऊपर है। चढ़ाई का मार्ग भारी दरार वाली ढलान वाला है जो पहाड़ की दाहिनी चोटी पर जाता है। शिखर तक जाने का प्रयास यहीं से किया जाता है। योग्य लीड गाइड और एक योग्य सहायक गाइड के साथ-साथ रसोई के उपकरण, रसोइयां और सहायक भी साथ लेते है। कैंपिंग की सारी व्यवस्था चढ़ाई के सभी उपकरण - स्नोशूज़, बर्फ कुल्हाड़ी, रस्सियाँ, कैरबिनर आदि सभी अपने साथ समूह के लोग लेकर चढ़ाई आरम्भ करते है। शुरू में तो कुछ दूरी तक चढ़ाई तक कोई समस्या नहीं हुई लेकिन अचानक मुझे चक्कर आया और मैं 10 मिनट के लिए रुक गयी। मेरी वजह से समूह के अन्य लोगो को समस्या न हो, इसी कारण मैं कुछ भी न बोली और दर्द सहन करती रही और आगे बढती रही। मेरे पति हमेशा मेरे साथ रहते और मेरा अच्छे से ख्याल रखते थे। पर्वत के इस सुंदर नजारे को देख मानो मेरे मन को अपूर्व ख़ुशी की अनुभूति हो रही थी और मेरा हौसला भी अब बुलंद होता जा रहा था। मैंने अपने जीवन में कभी भी इतना सुंदर नज़ारा नहीं देखा था। प्रकृति को मैंने काफी करीब से देखा। रात को तापमान शून्य से भी नीचे था और ठंड काफी अधिक थी। मैं सोच रही थी कि आगे जायें या न जायें। वहां एक अमेरिकन समूह भी था और उस समूह को एक भारतीय लीड कर रहा था। मैंने उनसे सलाह ली कि क्या मेरा इस अवस्था में ऊपर चढ़ाई करना सही होगा? उन्होंने मुझे पूर्ण आश्वासन दिया कि “आपको कोई समस्या नहीं होगी और यह यात्रा आपके लिए सुरक्षित यात्रा है।”फिर मैंने उनसे पूछा कि “क्या मुझे ऊपर चढ़ाई में

श्वांस लेने में कोई समस्या होगी?"उन्होंने काफी सहजता से मुझे समझाया कि "आप चिंता न करे और अपनी यात्रा को जारी रखें क्योंकि यहाँ जो भी ऑक्सीजन आपको मिलेगी वो एकदम शुद्ध।" मेरे अंदर के डर को तो उन्होंने खत्म कर दिया और उसके बाद मैं आगे बढ़ी। आगे एक नदी थी जिसका पानी पूरा ठंडा था। नदी को पार करना मेरे लिए कठिन था और मैंने एक पोर्टर के माध्यम से उस नदी को पार की। मैं पहले से अब काफी बेहतर महसूस कर रही थी। पूरी यात्रा में मुझे एक भी ऐंठन नहीं आई और मैं अपने साथ जितनी भी गोलियां लेकर गयी थी, उसमे से मुझे एक भी नही लेनी पड़ी। इसके लिए मैं हिमालय की शुक्रगुजार हूँ। 7 घंटे के लगातार चढ़ाई के पश्चात हम बाटल बेस कैंप में पहुंच जाते है और वहां विश्राम करते है।

मेरी पर्वत की ये यात्रा इसी जगह पर आकर समाप्त हो जाती है। मैं अब और ऊपर की ओर नहीं जाती हूँ। इस सफर में तो काफी कठिनाइयां आई, लेकिन सच कहूं तो पर्वत के इस अविस्मृत सफर का मेरे जीवन का यह पहला अनुभव था। समूह के अन्य लोग ऊपर चढ़ाई के लिए जाते है। लेकिन मैं उसी बेस कैंप में उनलोगों के वापस आने का इंतज़ार करती हूँ। उनलोगों के वापस आने के पश्चात अगले दिन हम मनाली वापस आ गये और वहां हम 2 दिन रुके। वहां के अद्भुत नज़ारे का आनंद लिया। उसके बाद हम सभी अपने घर वापस लौट आयें।यह मेरा प्रथम और एक छोटा-सा प्रयास था अपने जीवन की एक पुरानी याद को अपनी लेखनी के माध्यम से आप सभी के साथ साझा करने की। आशा करती हूँ कि आप पाठकों को मेरा यह प्रयास अच्छा लगा हो।

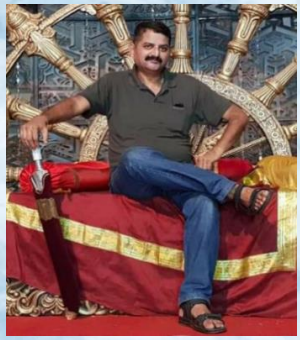

श्री संजय कोटलगी

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

स्वास्थ और स्वच्छता

प्रत्येक मनुष्य के ख़ुशहाल जीवन के लिए स्वास्थ और स्वच्छता दोनों ही अनिवार्य है। ये दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू है। स्वस्थ जीवन के लिए स्वच्छता बहुत ही आवश्यक है। मनुष्य के लिए केवल शारीरिक स्वस्थ होना ही नहीं बल्कि मानसिक रूप से स्वस्थ होना भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। ऐसा कहा जाता है कि केवल उन्हीं लोगों को स्वस्थ माना जा सकता है जिनके पास स्वस्थ शरीर और स्वस्थ दिमाग है। स्वस्थ और खुशहाल अस्तित्व के लिए स्वास्थ्य और स्वच्छता ये दोनों ही आवश्यक है। बीमारी से बचने और स्वास्थ्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखने के लिए आपके पास सटीक और व्यापक स्वास्थ्य ज्ञान होना चाहिए। हमें अपने दैनिक जीवन में स्वच्छता पर विशेष रूप से ध्यान देने की आवश्यकता है और अपने निवास स्थल के साथ-साथ अपने आस-पास के परिवेश को भी साफ़ सुथरा रखनी चाहिये। गंदगी कई बीमारियों को जन्म देती है। सूक्ष्म से सूक्ष्म बैक्टीरिया गंदे स्थानों में ही जन्म लेते है। ये बैक्टीरिया कई माध्यमों से हमारे शरीर में प्रवेश कर हमें बीमार कर देते है। आज तो नाना प्रकार की नई-नई बीमारियों का जन्म हो गया है। ऐसे में इन खतरनाक और जानलेवा बीमारियों से निजात पाने के लिए स्वच्छता में सतर्कता बरतने की आवश्यकता है।

आज हम अपने वर्तमान जीवन में इतना व्यस्त हो गये है कि हमें अपने स्वास्थ के लिए कुछ विशेष करने की फुर्सत नहीं होती है। यह सत्य है कि बढ़ते उम्र के साथ ही मनुष्य का स्वास्थ भी गिरता है। लेकिन यदि हम सही से खान-पान करे और विटामिन तथा प्रोटीन वाले खाद्य पदार्थों का सेवन करें, तो हम अपने स्वास्थ को बल प्रदान कर सकते है। इसलिए यह आवश्यक है कि हम अपने रोज के डाइट में पौष्टिक आहार का सेवन करें जिससे कि हमारे शरीर को आवश्यक पोषक तत्व मिल सके। ऋतू वाले फल जो विशेष ऋतू में ही उपलब्ध होते है उन फलों का सेवन भी स्वास्थ के लिए अत्यंत आवश्यक है। सर्दियों के मौसम में मिलने वाले फल जैसे कि- कीवी, सीताफल, स्ट्राबेरी इत्यादि शरीर को विशेष लाभ पहुंचाते है। सर्दियों में ड्राई फ्रूट्स का सेवन भी लाभप्रद होता है।

वहीं दूसरी ओर स्वस्थ शरीर के लिए नियमित व्यायाम करना भी जरुरी है। अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिए रोजाना 1 से 2 घंटा व्यायाम करना चाहिए, जिसमें टहलना भी शामिल है। व्यायाम हमारे शरीर को विभिन्न प्रकार के रोगों से बचाता है। हमारे शारीर को ऊर्जा प्रदान करता है और हमारे शारीर में रोगप्रतिरोधक क्षमता को भी बढाता है। इसलिए नियमित व्यायाम भी शरीर को स्वस्थ रखने के लिए आवश्यक है। व्यक्तिगत रूप से मैं खुद सुबह-सुबह रोजाना 1 घंटे टहलने के पश्चात व्यायाम करता हूँ। शाम के समय ऑफिस से लौटने के उपरांत अपने मित्रों के साथ अंटोपहिल के पार्क में सभी व्यायाम करते है। यह नियमित व्यायाम ही है जो मुझे 59 साल के उम्र में भी तंदरुस्त रखता है। स्वस्थ रहने के लिए हम सभी को नियमित व्यायाम करना आवश्यक है।

वहीं स्वस्थ और रोग मुक्त शरीर के लिए साफ़ पानी का सेवन करना चाहिए। आज प्रदूषण के दुष्प्रभाव ने सबसे अधिक जल को ही प्रभावित किया है। 'जल ही जीवन है' का स्लोगन बहुत ही पुराना है, लेकिन जल प्रदुषण का जिम्मेदार भी मानव ही है, जिसने अपने स्वार्थ के कारण नदी, तालाबों, जलाशयों को पूर्णतया दूषित कर दिया है। कुछ शहरों में स्थिति यह हो गयी है कि स्वच्छ पानी तो छोड़िये पानी का ही अभाव हो गया है। जल संरक्षण आज के समय में बहुत आवश्यक है जिससे कि मानव अपने अस्तित्व को बचा सके। स्वस्थ और निरोगी रहने के लिए हमें स्वच्छ जल का सेवन करना चाहिए और स्वच्छ भारत के लिए एक जिम्मेदार नागरिक होकर जल को नष्ट नहीं करना चाहिए। इसलिए स्वास्थ और स्वच्छता के लिए स्वच्छ जल का सेवन और जल संरक्षण का संकल्प हम सभी नागरिक को लेना चाहिए जिससे कि हम सभी और हमारी भावी पीढ़ी भी इस संकल्प से लाभान्वित हो सके।

2 अक्टूबर को गांधी जयंती के दिन स्वच्छता अभियान की शुरुआत माननीय श्री प्रधान मंत्री जी ने सम्पूर्ण देश में की थी। इस दिन सरकारी दफ्तर, स्कूल और कॉलेजों में तथा अपने आस-पास के परिवेश का लोग सफाई करते है। यह अभियान प्रधानमंत्री जी के द्वारा स्वच्छ भारत के लिए एक सकारात्मक पहल है। स्वच्छता के लिए उठाई गयी इस कदम की मैं दिल से सराहना करता हूँ। लेकिन इस अभियान के माध्यम से 1 दिन के लिए लोग साफ़-सफाई करते है और फिर साल भर सफाई भूल ही जाते है। गांधीजी के स्वच्छ भारत के सपनें को केवल उनके जयंती के दिन स्वच्छता अभियान में भाग लेकर पूरा नहीं किया जा सकता है। लोग इस दिन फ़ोटो खिचवाते है और सोशल मीडिया में पोस्ट करते है। लेकिन सिर्फ ऐसा करने से ही देश स्वच्छ तो बनने से रहा। लोग जिस स्कूल, दफ्तर, कॉलेज में रोजाना जाते है वहां यदि गंदगी भी दिखे तो इस तरह से नज़रंदाज़ करते है जैसेकि उन्हें कोई मतलब नहीं है और यही नही जब गाँधी जयंती हो और फ़ोटो खिचवाना हो तो उसी जगह को साफ़ सफाई करेंगे। उसके बाद फ़ोटोवीर बन जायेंगे। फ़ोटोवीरों से सावधान!!!

“कूड़ा करकट फेंके और नदियों तालाबों में सामान,

फिर बाटें सभी ओर हम स्वच्छता का ज्ञान।।“

चाहे दफ्तर हो या घर, यह हमारी ही जिम्मेदारी है कि हम गंदगी न फैलाएं और न ही दूसरों को गंदगी फैलाने दें। सबसे पहले स्वच्छता का संकल्प स्वयं लीजिये, तत्पश्चात आपने अनुज, आपके सहकर्मी, आपके मित्रगण स्वयं ही अनुशरण करेंगे। हमें केवल स्वयं को ही निरोगी और स्वस्थ नहीं बनाना है बल्कि हमें यह भी संकल्प लेना है कि हम अपने दैनिक कृत्यों में सावधानी बरतेंगे और कूड़ा-करकट कूड़ेदानी में ही फेकेंगे। अपने भावी पीढ़ी को सुरक्षित रखने के लिए हमें प्रतिबद्ध होना है। तो आइये आज से हम सभी मिलकर स्वच्छ भारत का संकल्प ले।

..जय हिन्द..

श्री जयराम सिंह

कनिष्ठ अनुवादक

चार मुक्तक

(1)

खुदा की राह में ऐसे शरारत कौन करता है
उठा कर हाथ में पत्थर इबादत कौन करता है
परेशानी अगर है कुछ चलो शिकवा करो हम से,
खुदा के नाम पर ऐसी ज़हालत कौन करता है ?

(2)

शिक़वा न शिकायत न गिला आप से कोई
कहना ग़लत, हुई है खता आप से कोई
हालात से अपने ही फक़त सोगवार हूँ
दिल की सदा जा के कह दे आप से कोई ।

(3)

तपन हर लें जो वसुधा की, कहाँ वो मेघ गुमसुम हैं
चराचर हो रहे व्याकुल, बहुत बेचैन हम तुम हैं
झमाझम झूम कर बारिश, न जाने कब भिंगोएगी,
चमन में छाए हरियाली समर्पित फूल कुमकुम हैं ।

(4)

बहाने से पसीना ही,सदा किस्मत सँवरती है

जवानी की कहानी भी,पसीने से निखरती है

धरा पर भी जहाँ गिरतीं सुगंधित श्वेद की बूंदें,

उन्हीं बूँदों के भूषण से धरा सजती सँवरती है ।

सुश्री पूजा साव
कनिष्ठ अनुवादक

स्वाभूतानन्दी हूं

दादरा नहीं और न दीपचन्दी हूँ
इतना क्या कम है कि स्वभूतानन्दी हूँ
मेरे सुखन को छल कहना है कह लो
मेरे नमन को निर्बल कहना है कह लो
कहानी को यह तेरा दिया रूप है
बिल्कुल तेरी बुद्धि के अनुरूप है
मेरा कथानक अब भी मेरे पास है
अभी वह उजड़ा है और उदास है
नभ के सितारों के आगे भी जहाँ है
हम तुम जहाँ नहीं ईश्वर वहाँ है
प्रेम को घृणा से तोलना है तोल लो
जो बोलना है बेधड़क बोल लो
अर्थों में फर्क हूँ जो कि निरन्तर है
अब सजग हूँ सतर्क हूँ यही अन्तर है
ताउम्र टपकेगा रस ऐसी तुकबन्दी हूँ
इतना क्या कम है कि स्वभूतानन्दी हू

सुश्री पूजा साव
कनिष्ठ अनुवादक

जलवायु परिवर्तन

जलवायु परिवर्तन पृथ्वी की पर्यावरणीय परिस्थितियों में अवांछित परिवर्तन को कहते हैं। यह कई आंतरिक और बाहरी कारकों के कारण होता है। जलवायु परिवर्तन पिछले कुछ दशकों में एक वैश्विक चिंता का विषय बन गया है। इन जलवायु परिवर्तनों का पारिस्थितिकी तंत्र और पारिस्थितिकी पर विभिन्न प्रभाव पड़ रहे हैं। इन परिवर्तनों के कारण पौधों और जानवरों की कई प्रजातियां विलुप्त हो गई हैं। आँकड़े दर्शाते हैं कि 19वीं सदी के अंत से अब तक पृथ्वी की सतह का औसत तापमान लगभग 1.62 डिग्री फॉरनहाइट (अर्थात् लगभग 0.9 डिग्री सेल्सियस) बढ़ गया है। इसके अतिरिक्त पिछली सदी से अब तक समुद्र के जल स्तर में भी लगभग 8 इंच की बढ़ोतरी दर्ज की गई है।

क्या है जलवायु परिवर्तन?

जलवायु परिवर्तन को समझने से पूर्व यह समझ लेना आवश्यक है कि जलवायु क्या होता है? सामान्यतः जलवायु का आशय किसी दिए गए क्षेत्र में लंबे समय तक औसत मौसम से होता है। अतः जब किसी क्षेत्र विशेष के औसत मौसम में परिवर्तन आता है तो उसे जलवायु परिवर्तन (Climate Change) कहते हैं।

जलवायु परिवर्तन को किसी एक स्थान विशेष में भी महसूस किया जा सकता है एवं संपूर्ण विश्व में भी। यदि वर्तमान संदर्भ में बात करें तो इसका प्रभाव लगभग संपूर्ण विश्व में देखने को मिल रहा है।

पृथ्वी का अध्ययन करने वाले वैज्ञानिक बताते हैं कि पृथ्वी का तापमान लगातार बढ़ता जा रहा है। पृथ्वी का तापमान बीते 100 वर्षों में 1 डिग्री फारेनहाइट तक बढ़ गया है। पृथ्वी के

तापमान में यह परिवर्तन संख्या की दृष्टि से काफी कम हो सकता है, परंतु इस प्रकार के किसी भी परिवर्तन का मानव जाति पर बड़ा असर हो सकता है।

जलवायु परिवर्तन के कुछ प्रभावों को वर्तमान में भी महसूस किया जा सकता है। पृथ्वी के तापमान में वृद्धि होने से हिमनद पिघल रहे हैं और महासागरों का जल स्तर बढ़ता जा रहा है, परिणामस्वरूप प्राकृतिक आपदाओं और कुछ द्वीपों के डूबने का खतरा भी बढ़ गया है।

जलवायु परिवर्तन के कारण

ग्रीनहाउस गैसें:

पृथ्वी के चारों ओर ग्रीनहाउस गैस की एक परत बनी हुई है जिसमें मिथेन, नाइट्रस ऑक्साइड, क्लोरोफ्लोरोकार्बन और कार्बन डाइऑक्साइड जैसी गैसें शामिल हैं। ग्रीनहाउस गैसों की यह परत पृथ्वी की सतह पर तापमान संतुलन को बनाए रखने में आवश्यक है और विश्लेषकों के अनुसार, यदि यह परत नहीं होगी तो पृथ्वी का तापमान काफी कम हो जाएगा। ग्रीनहाउस गैसों की मात्रा जब तक नियंत्रण में है, यह पृथ्वी के लिए लाभदायक है। परंतु आधुनिक युग में जैसे-जैसे मानवीय गतिविधियाँ बढ़ रही हैं, वैसे-वैसे ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में भी वृद्धि हो रही है जो पृथ्वी की पारिस्थिकीय तंत्र के लिए अत्यंत हानिकारक है और जिसके कारण वैश्विक तापमान में वृद्धि हो रही है।

भूमि के उपयोग में परिवर्तन

वाणिज्यिक या निजी प्रयोग हेतु वनों की कटाई भी जलवायु परिवर्तन का बड़ा कारक है। पेड़ न सिर्फ हमें फल और छाया देते हैं, बल्कि ये वातावरण से कार्बन डाइऑक्साइड जैसी महत्त्वपूर्ण ग्रीनहाउस गैस को अवशोषित भी करते हैं। वर्तमान समय में जिस तरह से वृक्षों की कटाई की जा रही हैं वह काफी चिंतनीय है, क्योंकि पेड़ वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करने वाले प्राकृतिक यंत्र के रूप में कार्य करते हैं और उनकी समाप्ति के साथ हम वह प्राकृतिक यंत्र भी खो देंगे। कुछ देशों जैसे- ब्राज़ील और इंडोनेशिया में निर्वनीकरण ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन का सबसे प्रमुख कारण है।

शहरीकरण

शहरीकरण और औद्योगिकीकरण के कारण लोगों के जीवन जीने के तौर-तरीकों में काफी परिवर्तन आया है। विश्व भर की सड़कों पर वाहनों की संख्या काफी अधिक हो गई है। जीवन शैली में परिवर्तन ने खतरनाक गैसों के उत्सर्जन में काफी अधिक योगदान दिया है।

जलवायु परिवर्तन के प्रभाव

उच्च तापमान

पावर प्लांट, ऑटोमोबाइल, वनों की कटाई और अन्य स्रोतों से होने वाला ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन पृथ्वी को अपेक्षाकृत काफी तेज़ी से गर्म कर रहा है। पिछले 150 वर्षों में वैश्विक औसत तापमान लगातार बढ़ रहा है और वर्ष 2016 को सबसे गर्म वर्ष के रूप में रिकॉर्ड किया गया है। गर्मी से संबंधित मौतों और बीमारियों, बढ़ते समुद्र स्तर, तूफान की तीव्रता में वृद्धि और जलवायु परिवर्तन के कई अन्य खतरनाक परिणामों में वृद्धि के लिये बढ़े हुए तापमान को भी एक कारण माना जा सकता है। एक शोध में पाया गया है कि यदि ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन के विषय को गंभीरता से नहीं लिया गया और इसे कम करने के प्रयास नहीं किये गए तो सदी के अंत तक पृथ्वी की सतह का औसत तापमान 3 से 10 डिग्री फारेनहाइट तक बढ़ सकता है।

वर्षा के पैटर्न में बदलाव

पिछले कुछ दशकों में बाढ़, सूखा और बारिश आदि की अनियमितता काफी बढ़ गई है। यह सभी जलवायु परिवर्तन के परिणामस्वरूप ही हो रहा है। कुछ स्थानों पर बहुत अधिक वर्षा हो रही है, जबकि कुछ स्थानों पर पानी की कमी से सूखे की संभावना बन गई है।

समुद्र जल के स्तर में वृद्धि

वैश्विक स्तर पर ग्लोबल वार्मिंग के दौरान ग्लेशियर पिघल जाते हैं और समुद्र का जल स्तर ऊपर उठता है जिसके प्रभाव से समुद्र के आस-पास के द्वीपों के डूबने का खतरा भी बढ़ जाता है। मालदीव जैसे छोटे द्वीपीय देशों में रहने वाले लोग पहले से ही वैकल्पिक स्थलों की तलाश में हैं।

वन्यजीव प्रजाति का नुकसान

तापमान में वृद्धि और वनस्पति पैटर्न में बदलाव ने कुछ पक्षी प्रजातियों को विलुप्त होने के लिये मजबूर कर दिया है। विशेषज्ञों के अनुसार, पृथ्वी की एक-चौथाई प्रजातियाँ वर्ष 2050 तक विलुप्त हो सकती हैं। वर्ष 2008 में ध्रुवीय भालू को उन जानवरों की सूची में जोड़ा गया था जो समुद्र के स्तर में वृद्धि के कारण विलुप्त हो सकते थे।

रोगों का प्रसार और आर्थिक नुकसान

जानकारों ने अनुमान लगाया है कि भविष्य में जलवायु परिवर्तन के परिणामस्वरूप मलेरिया और डेंगू जैसी बीमारियाँ और अधिक बढ़ेंगी तथा इन्हें नियंत्रित करना मुश्किल होगा। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के आँकड़ों के अनुसार, पिछले दशक से अब तक हीट वेव्स (Heat waves) के कारण लगभग 150,000 से अधिक लोगों की मृत्यु हो चुकी है।

जंगलों में आग

जलवायु परिवर्तन के कारण लंबे समय तक चलने वाली हीट वेव्स ने जंगलों में लगने वाली आग के लिये उपयुक्त गर्म और शुष्क परिस्थितियाँ पैदा की हैं। ब्राज़ील स्थित नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर स्पेस रिसर्च (National Institute for Space Research-INPE) के आँकड़ों के मुताबिक, जनवरी 2019 से अब तक ब्राज़ील के अमेज़न वन (Amazon Forests) कुल 74,155 बार वनाग्नि का सामना कर चुके हैं। साथ ही यह भी सामने आया है कि अमेज़न वन में आग लगने की घटना बीते वर्ष (2018) से 85 प्रतिशत तक बढ़ गई हैं।

जलवायु परिवर्तन और खाद्य सुरक्षा:

जलवायु परिवर्तन के कारण फसल की पैदावार कम होने से खाद्यान्न समस्या उत्पन्न हो सकती है, साथ ही भूमि निम्नीकरण जैसी समस्याएँ भी सामने आ सकती हैं। एशिया और अफ्रीका पहले से ही आयातित खाद्य पदार्थों पर निर्भर हैं। ये क्षेत्र तेज़ी से बढ़ते तापमान के कारण सूखे की चपेट में आ सकते हैं। IPCC की रिपोर्ट के अनुसार, कम ऊँचाई वाले क्षेत्रों में गेहूँ और मकई जैसी फसलों की पैदावार में पहले से ही गिरावट देखी जा रही है। वातावरण में कार्बन की मात्रा बढ़ने से फसलों की पोषण गुणवत्ता में कमी आ रही है। उदाहरण के लिये उच्च कार्बन वातावरण के कारण गेहूँ की पौष्टिकता में प्रोटीन का 6% से 13%, जस्ते का 4% से 7% और लोहे का 5% से 8% तक की कमी आ रही है। यूरोप में गर्मी की लहर की वजह से फसल की पैदावार गिर रही है।

ब्लूमबर्ग एग्रीकल्चर स्पॉट इंडेक्स (Bloomberg Agriculture Spot Index) 9 फसलों का एक मूल्य मापक है जो मई में एक दशक के सबसे निचले स्तर पर आ गया था। इस सूचकांक की अस्थिरता खाद्यान सुरक्षा की अस्थिरता को प्रदर्शित करती है।

संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन फ्रेमवर्क सम्मेलन (UNFCCC)

यह एक अंतर्राष्ट्रीय समझौता है जिसका उद्देश्य वायुमंडल में ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को नियंत्रित करना है। यह समझौता जून, 1992 के पृथ्वी सम्मेलन के दौरान किया गया था। विभिन्न देशों द्वारा इस समझौते पर हस्ताक्षर के बाद 21 मार्च, 1994 को इसे लागू किया गया। वर्ष 1995 से लगातार UNFCCC की वार्षिक बैठकों का आयोजन किया जाता है। इसके तहत ही वर्ष 1997 में बहुचर्चित क्योटो समझौता (Kyoto Protocol) हुआ और विकसित देशों (एनेक्स-1 में शामिल देश) द्वारा ग्रीनहाउस गैसों को नियंत्रित करने के लिये लक्ष्य तय किया गया। क्योटो प्रोटोकॉल के तहत 40 औद्योगिक देशों को अलग सूची एनेक्स-1 में रखा गया है। UNFCCC की वार्षिक बैठक को कॉन्फ्रेंस ऑफ द पार्टीज़ (COP) के नाम से जाना जाता है। अभी हाल ही में COP28 नाम से UNFCCC की वार्षिक बैठक संपन्न हुई है ।

पेरिस समझौता

यदि कम शब्दों में कहा जाए तो पेरिस समझौता जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिये एक अंतर्राष्ट्रीय समझौता है। वर्ष 2015 में 30 नवंबर से लेकर 11 दिसंबर तक 195 देशों की सरकारों के प्रतिनिधियों ने पेरिस में जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिये संभावित नए वैश्विक समझौते पर चर्चा की। ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने के लक्ष्य के साथ संपन्न 32 पृष्ठों एवं 29 लेखों वाले पेरिस समझौते को ग्लोबल वार्मिंग को रोकने के लिये एक ऐतिहासिक समझौते के रूप में मान्यता प्राप्त है।

भविष्य क्या होगा?

अगर हमने कुछ नहीं किया और चीजें अभी की तरह चलती रहीं तो भविष्य में एक दिन ऐसा आएगा जब इंसान धरती की सतह से विलुप्त हो जाएगा। लेकिन इन समस्याओं की उपेक्षा करने के बजाय हम कार्य करना शुरू करते हैं तो हम पृथ्वी और हमारे भविष्य को बचा सकते हैं। हालांकि मनुष्य की गलती से जलवायु और पारिस्थितिकी तंत्र को काफी नुकसान पहुंचा है। लेकिन, फिर से शुरू करने और पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने के लिए हमने अब तक जो किया है उसे पूर्ववत् करने की कोशिश करने में देर नहीं हुई है। और अगर हर मनुष्य पर्यावरण में योगदान देना शुरू कर दे तो हम भविष्य में अपने अस्तित्व के बारे में सुनिश्चित हो सकते हैं।

अरुण कुमार साव
कनिष्ठ अनुवादक

शिक्षा का महत्व

शिक्षा प्रत्येक मनुष्य के लिए उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि जीवन के लिए भोजन और जल। बिना शिक्षा के मनुष्य का जीवन अंधकारमय है। शिक्षा ही वह साधन या माध्यम है जिससे एक मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन सुखद बन सकता है। शिक्षा मानव विकास और प्रगति के लिए भी अत्यंत आवश्यक है। यह समाज में अज्ञानता को खत्म करती है और समाज के हर एक क्षेत्र को जागरूक बनाती है। यह समाज के प्रत्येक क्षेत्र में समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करती है। यह किसी भी व्यक्ति को योग्यता और कौशल प्रदान करती है। इसके माध्यम से एक मनुष्य व्यक्तिगत उत्थान और आर्थिक स्वालम्बन के साथ-साथ समाज सेवा की मार्ग तय करता है। यह ज्ञानार्जन के साथ-साथ समाज में अपनी पहचान बनाने का भी माध्यम है। एक पढ़ा लिखा व्यक्ति ही समाज को सही दिशा प्रदान कर सकता है और अपनी आने वाली पीढ़ी को भी इसके महत्व को समझा सकता है।

किसी भी व्यक्ति की शिक्षा-दीक्षा सर्वप्रथम बाल्यावस्था में उनके माता-पिता के माध्यम से ही होती है। माता-पिता ही हमें सबसे पहले शिक्षा का उचित महत्व बताते है। विशेषकर एक माँ का अपने बच्चों के शिक्षा में विशेष योगदान होता है। इसलिए एक व्यक्ति का प्रथम शिक्षक माँ होती है। धीरे-धीरे हम 3-4 साल के हो जातें है और तब हमें पाठशाला भेजा जाता है। बढ़ते उम्र के साथ-साथ हम एक-एक कक्षा ऊपर उठते जाते है। इसी तरह से हम 12वीं तक की परीक्षा पास हो जाते है। लेकिन बुनियादी शिक्षा तो माता-पिता से ही प्राप्त होती है। 12वीं तक की पढाई समाप्त होने के पश्चात् ही विद्यार्थियों के जीवन में कठिन चुनौतियां का सामना होता है। इसके बाद ही एक व्यक्ति के भविष्य का निर्धारण होता है कि उसे अपने जीवन में क्या बनना है? इस परिस्थिति में उन्हें अपनी रूचि के अनुसार आगे की पाठ्यक्रम को चुनना पड़ता है। साहित्य, कला, विज्ञान, कौशल, गणित, व्यावसायिक शिक्षा, तकनीकी शिक्षा इत्यादि कई क्षेत्र है, जिसमें व्यक्ति अपनी रूचि के अनुसार किसी एक क्षेत्र में शिक्षा प्राप्त करता है और ज्ञानोपार्जन के साथ-साथ धनोपार्जन भी करता है।

वर्तमान में शिक्षा का महत्व और भी बढ़ गया है। इसका सीधा कारण तकनीक और डिजिटलीकरण है। पिछले कुछ सालों की बात करें तो तकनीक ने काफी तेज़ी से सम्पूर्ण विश्व में अपने पाँव पसारे है। आने वाले समय में इसका और भी तीव्र गति से विस्तार होगा.... ये तो स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है। ऐसे में तकनीक और डिजिटल उपकरणों का लाभ उठाने के लिए शिक्षा के महत्व को और बढ़ा देता है। अगर व्यक्ति शिक्षित नहीं होगा तो वो इस डिजिटल युग के काफी पीछे छुट जाएगा। दैनिक जीवन में प्रयोग में होने आले सभी उपकरण अब डिजिटल है और उसके लिए पढ़ा लिखा होना भी अनिवार्य है अन्यथा आप इससे पीछे रह जायेंगे। इसलिए शिक्षा ही वह बीच की कड़ी है, जो समाज के प्रत्येक नागरिक, वर्ग, समूह को इस तकनीकी युग से जोड़ने का काम करता है। एक शिक्षित व्यक्ति ही तकनीकी सुख सुविधाओं का सरलता से लाभ उठा सकता है और और डिजिटल उपकरणों का सही तरीके से उपयोग करने में सक्षम होता है।

आधुनिक युग में तकनीक के साथ ही शिक्षा व्यवस्था में भी क्रन्तिकारी परिवर्तन हुआ है। प्राचीन काल के लोग शिक्षा प्राप्त करने के लिए गुरुकुल में गुरु के समीप रहकर शिक्षा प्राप्त करते थे। उसके पश्चात् स्कूलों में विद्यार्थी एक साथ एक कक्षा में पढाई करने लगे, जैसा आज भी होता है। लेकिन इसके अलावा अब शिक्षा को तकनीक से जोड़ दिया गया है। अब ऑनलाइन का जमाना है साहब। यहां लोग कई माध्यमों से पढाई करते है। अब शिक्षा क्लासरूम से निकलकर बेडरूम तक पहुंच गया है। अब ऑनलाइन के माध्यम से घर बैठे ही दूरस्थ शिक्षा प्राप्त कर सकते है। विद्यार्थी अब लैपटॉप और मोबाइल के माध्यम से घर बैठकर ही तरह तरह के कोर्स कर रहें है और डिग्री भी हांसिल कर रहे है। इस क्रांतिकारी पहल ने शिक्षा के आयाम को परिवर्तित कर दिया है। इसके माध्यम से काफी लोगों को फायदा पहुंच रहा है। लोग अपने-अपने समय और सुविधा के अनुसार पढाई कर पाते है। इसके लाभ के साथ ही इसके कुछ हानियां भी है। 'सामाजिक दुराव' इसके सबसे प्रमुख हानियों में से एक है।

जैसा कि हम सभी इस तथ्य से भली भांति अवगत है कि शिक्षा का आशय केवल ज्ञानार्जन से नहीं है बल्कि अब शिक्षा का मूल उदेश्य रोजगार पाने और आर्थिक उपार्जन से है। इस होड़ में शिक्षा का अब व्यापक स्तर पर व्यापार किया जाने लगा है। अब प्रश्न यह उठता है कि जब एक व्यक्ति के सम्पूर्ण विकास के लिए शिक्षा का इतना अधिक महत्व है, तो क्या यह सभी के पास सरलता और सहजता से उपलब्ध हो पाता है? सरल शब्दों में इस प्रश्न का उत्तर दे पाना तो कठिन ही है। क्योंकि भारत जैसे विशाल देश में शिक्षा का समुचित व्यवस्था कर पाना सरकार के लिए अत्यंत कठिन कार्य रहा है। 130 करोड़ से भी अधिक आबादी वाली जनसमूह को पूर्णतः शिक्षित कर पाने के लिए न तो सरकार के पास आर्थिक साधन है और

न उसके पास प्रबंधकीय सुविधाएं उपलब्ध है। यही कारण है की आज शिक्षा का निजीकरण अपने चरम स्तर पर है। शिक्षा का व्यापार यत्र तत्र और सर्वत्र व्याप्त है। आज सरकारी स्कूलों की अपेक्षा निजी स्कूलों में अभिभावकों की अधिक रूचि देखी जा रही है। आर्थिक रूप से कमजोर परिवार के बच्चें सरकारी स्कूलों में पढाई करने जाते है। मध्यम वर्ग और आर्थिक रूप से समृद्ध वर्ग के बच्चें बड़े-बड़े निजी स्कूलों में दाखिला लेते है। यहीं से समाज में शिक्षा व्यवस्था में यह बीच की खाई विशाल हो जाती है। आशय यह है कि दोनों ही स्कूलों की पढ़ाई और परिवेश एकदम अलग है। इतना अलग कि इन दोनों के बीच के अंतर को आप स्पष्ट रूप से समझ पायेंगे। ये असमानता ही देश के प्रगति में बाधक है। गरीब अभिभावक अपने सारे सपनों का गला घोट कर भी अपने बच्चों के लिए उचित शिक्षा नहीं दे पाते है। इनकी सारी प्रतिभा मजदूरी करने में जाकर समाप्त हो जाती है। परिणाम यह होता है कि गरीब वर्ग और भी गरीब होता चला जाता है। सरकारी स्कूलों की स्थिति मैं भली-भांति जानता हूँ क्योंकि मैं स्वंय ही एक सरकारी स्कूल से पढ़ा हूँ और कई वर्षो तक निजी स्कूलों के बच्चों को ट्यूशन भी दिया हूं, तो इस अंतर को मैं अच्छे से समझ सकता हूँ। अब स्थिति यह है कि आर्थिक रूप से भी कमज़ोर अभिभावकों का भी यही प्रयास रहता है कि कम से कम प्राथमिक स्तर तक अपने बच्चों का दाखिला निजी स्कूलों में करवाएं। परिणामस्वरूप स्थिति यह हो गयी है कि पहले से बेहाल सरकारी स्कूलों में छात्रों की संख्या दिनों दिन घटती जा रही है। वहीं यदि हम निजी स्कूल की बात करें तो वहां सरकारी स्कूलों की तुलना में काफी बेहतर सुविधाएं मिलती है। इसी सुविधा के नाम पर मनमाने रूप से फी वसूली भी किया जा रहा है। यह सुविधाएं सरकारी स्कूलों में उपलब्ध नहीं है। निजी स्कूलों में पढाई के साथ-साथ खेल-कूद और अन्य पाठ्येतर गतिविधियों की समुचित व्यवस्था है। बच्चों को स्कूल तक ले जाने के लिए वाहन व्यवस्था है। अंग्रेजी का वर्चस्व है तथा भारी-भरकम पाठ्यक्रम है। अभिभावक इससे संतुष्ट हो जाते है कि उनका बच्चा अच्छी शिक्षा प्राप्त कर रहा है।

यह तो केवल प्राथमिक स्तर की बात थी। व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में तो जैसे पैसे की बाढ़ सी आ गयी है। चिकित्सा, एम,बी.ए, इंजीनियरिंग, होटल प्रबन्धन, पत्रकारिता, कौशल विकास आदि की शिक्षा पाने के लिए तो मनमाने रूप से पैसें की वसूली हो रही है। यहाँ तो हज़ार में कोई किसी की सुनता भी नही है। यहाँ तो लाखों की बात होती है। यहाँ योग्यता की नहीं बल्कि पैसे का बोलबाला है। जिसके पास पैसा होता है उसी का ही दाखिला बड़े-बड़े शैक्षणिक संस्थानों में हो पाता है। इसका परिणाम यह होता है कि योग्य युवक और युवतियां आर्थिक रूप से कमजोर होने के कारण इन महंगे और बड़े-बड़े शैक्षणिक संस्थानों में दाखिला नहीं ले पाते है,

जिनसे उनके सपने अधूरे रह जाते है। इससे किसी का नही बल्कि अपने देश, अपने समाज का ही नुक्सान होता है। धनबल के सामने ज्ञानबल की पराजय होती है।

शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार भारत के हर नागरिक को है। चाहे वह गरीब हो या अमीर शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार सभी को होनी चाहिए। इसके मध्य पैसे की कोई रुकावट या बाधा नहीं होनी चाहिए। इसके लिए सरकार को शिक्षा के क्षेत्र में अधिक से अधिक कार्य करने की आवश्यकता है, जिससे कोई भी ऐसा नागरिक न हो जो शिक्षा से वंचित रहे। क्योंकि "पढ़ेगा भारत तभी तो बढ़ेगा भारत"। शिक्षा के क्षेत्र में सरकार ने विभिन्न योजनाओं की शुरुआत की हैं। जैसे- समग्र शिक्षा अभियान, पीएम पोषण योजना, राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान, उन्नत भारत अभियान, सर्व शिक्षा अभियान इत्यादि। ऐसे और भी कई सारे योजनायें है जिसे सुचारू रूप से आम नागरिक के मध्य पहुंचाना चाहिए। जिससे कि अधिक से अधिक लोगों को इन सभी योजनाओं का लाभ मिल सके। भारत की साक्षरता दर आने वाले सालों में 100% होनी चाहिए। जिससे कि हमारा देश सम्पूर्ण विश्व में विश्व गुरु बन सके। शिक्षा ही वो हथियार है जिससे देश की दशा और दिशा दोनों बदल सकती है।

सुश्री प्रियंका त्रिवेदी
कनिष्ठ अनुवादक

चिरशान्ति!

ओ मेरे जीवन के अंत!

मन में तुम्हें खोजती प्रतिक्षण
करती हूं प्रतिपल आह्वान
खोज रही हूं गिरि उपवन वन
तभी सार्थक होगा जीवन-

आओगे जब विस्मृति लेकर
व्यथित हृदय के मधुर वसंत।
मेरे साथी तुम्हीं अकेले
भटकी नित्य निराशाएं ले
कितने ही भ्रम मैंने पाले
किंतु शांति के साथी तुम हो-
चिर नवीन संदेश तुम्हारा
गूंज रहा है दिग-दिगंत।

यही शेष इच्छा है मन की
याद न आए अपनेपन की
स्मृति केवल अंतिम प्रण की
नीरवता में सो जाऊं मैं-
हो करके विलीन तुझमें ही
ओ! चिर शाश्वत, चिर अनंत!

इमरान खाटीक
वरिष्ठ लेखापरीक्षाक

तेरी ना, नहीं।

बस उसने एक बार कहा ……………….हम लौटे नहीं फिर से।

तुम अपने वादे पर टिकना, हम अपने वादे पर टिकेंगे, चाहेंगे ना तुझे फिर से।

ख़ता क्या थी हमारी इतना तो एक बार जरूर बताते ,
मोहब्बत तुझसे ना हो पायी या हम समझे नहीं तुझे फिर से।

खाली पड़ा है मेरे दिल का मकान तेरे चले जाने से, अब ना आयेगा कोई इसमें फिर से।

रातें बेशुमार गुजरी कश्मकश में, ये सोचकर
बिना मेरे कंधे के तुम सोये नहीं होंगे फिर से।

एक तेरी ना- नहीं, ने है अब मेरी जिंदगी बदल दी और कितनी दफ़ा तुमसे ना सुन पाते, तुम ही बताओ वापस लौट कर फिर से कैसे आते।

याद तो तुम बहुत आती हो पर दिल डरता है ये सोचके,
तुम यह न कह दो मिलने पर कि, "तुम चले जाओ फिर से।"

कार्यालय में आयोजित हिंदी पखवाड़ा समारोह

हिंदी पखवाड़ा समारोह के दौरान पुरस्कार वितरण

राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्य हेतु रिपोर्ट अनुभाग तथा भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण, मुंबई राजभाषा शील्ड (वर्ष 2022-23) लेते हुए

रिपोर्ट अनुभाग

भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण, मुंबई

राजभाषा परिवार

कार्यालय के मनोरंजन क्लब द्वारा आयोजित दिपावली

कार्यालय महानिदेशक
वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई
Office of the Director General
of Commercial Audit, Mumbai

कार्यालय के मनोरंजन क्लब द्वारा आयोजित पिकनिक की कुछ झलकियां

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय, मुंबई
O/O THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT (CENTRAL),MUMBAI
C-25,AUDIT BHAVAN, BANDRA KURLA COMPLEX, MUMBAI- 400 051
E-MAIL – PDACENTRALMUMBAI@CAG.GOV.IN

सत्यमेव जयते

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सं.म.नि.ले.प./कें./रा.भा.अ./पत्रिका लेखापरीक्षा ज्ञानोदय/2023-24/55 दिनांक:21.11.2023

सेवा में
व.ले.प.अ./प्रशासन
महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा का कार्यालय, आँठवा तल
ऑडिट भवन, बी.के.सी. बांद्रा (पूर्व),मुंबई -400051

विषय :- वार्षिक हिंदी पत्रिका **"लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" 13वें अंक** की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक हिंदी पत्रिका **"लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" 13वें अंक** की प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद । इसके आवरण पृष्ठ, साज-सज्जा एवं अन्य कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र अत्यंत मनोरम है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्धक, मनोरंजक, पठनीय एवं सराहनीय है। निम्नलिखित रचनाकारों के रचनाएँ विशेष उल्लेखनीय हैं:-

क्र.सं	रचनाकार	रचनाएँ
1.	सुश्री प्रियंका त्रिवेदी	आत्म विश्वास
2.	श्री अरुण कुमार साव	राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका
3.	सुश्री पूजा कुमारी साव	महानगर में रहने के फायदे एवं नुकसान
4.	सुश्री स्वपना फुलपाड़िया	रथ यात्रा जय जगन्नाथ
5.	श्री जयराम सिंह	भारत की जी-20 अध्यक्षता : आयाम और महत्व

सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु बधाई एवं पत्रिका के निरंतर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ ।

E-NO/1377457/Admin

29 NOV 2023

भवदीया

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी) पंजाब एवं यू.टी.,सेक्टर-17ई, चंडीगढ़ -160017
Office of ACCOUNTANT GENERAL (A & E) PUNJAB & U.T., Sector-17E, CHANDIGARH - 160017
फैक्स - 0172-2703110, दू. सं. - 2702272, 2702072

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

आज़ादी का अमृत महोत्सव

क्रमांक - हिंदी कक्षा/समीक्षा/10/2023-24/574 दिनांक-10.11.2023

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी,कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यक लेखापरीक्षा,
सी-25,ऑडिट भवन,8वां तल ,
बांद्रा कुर्ला, काम्प्लेक्स,बांद्रा(पूर्व) मुंबई-400051

विषय - विभागीय हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के 13वें अंक की पावती के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के 13वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है। कार्यालयीन गतिविधियों के छायाचित्र भी मनमोहक हैं।

श्री सरोज प्रजापति की 'आधुनिक विकास', सुश्री पूजा साव की 'महानगर में रहने के फायदे और नुकसान', श्री इमरान खाटीक की 'मेरे बचपन के यार', सुश्री फातेमा जुजर हवेलीवाला की 'कुछ खास दिल के पास है रहते', रचनाएं विशेष रुप से प्रशंसनीय है।

पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने हेतु संपादकीय परिवार ने पूर्ण प्रयास किए है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

E-NO/1356520/Admin

20 NOV 2023

भवदीय

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिंदी

International Centre for Information Systems & Audit

International Training Centre of Comptroller & Auditor General Of India
www.cag.gov.in/icisa/en

संख्या:Admn-i-Est10rajb/1/2020-Admn(Comp No.14025)/427 दिनांक:10.11.2023

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी(प्रशासन)
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा मुंबई
सी-25,ऑडिट भवन 8वां तल,बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स,
बांद्रा(पू) मुंबई-400051

विषय: आपके द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय " के 13वें अंक के प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित की गई हिन्दी गृह पत्रिका **"लेखापरीक्षा ज्ञानोदय " के 13वें** अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में सभी लेख, रचनाएँ और विचार सरल, पठनीय एवं प्रशंसनीय है।

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटी बनाने मे योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हमारे कार्यालय आईसीसा नोएडा की तरफ से हार्दिक शुभकामनाएं।

E-No/1356494/Admin
20 NOV 2023

भवदीय,
10/11/23
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी (प्रशासन)

A-52, Sector-62, Institutional Area, Phase-II, Noida - 201309 (U.P.) INDIA
Tel.: +91-120-2400050, 51, 52 Fax : +91-120-2400041 / 2401430

कार्यालय महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-II), पश्चिम बंगाल
Office of the Accountant General
(Audit–II), West Bengal

संख्या :- हिंदी कक्ष/पत्रिका पावती/ 94 दिनांक:- 19 /10/2023

19 OCT 2023

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन,
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई
सी-25, 'ऑडिट भवन', 8वाँ तल, बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स, बांद्रा (पू),
मुंबई - 400051

E-No/1293521/Admn
25 OCT 2023

To,
Senior Audit Officer/Administration,
Office of The Director General of Commercial Audit, Mumbai
C-25, 'Audit Bhavan', 8th Floor, Bandra-Kurla Complex
Mumabi-400051

विषय: हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 13वें संस्करण की ई-प्रति की प्राप्ति का प्रेषण।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका, **'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय'** के 13 वें संस्करण के ई-प्रति की प्राप्ति हुई। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आतंरिक साज-सज्जा सुन्दर एवं आकर्षक है। पत्रिका में प्रकाशित रचनाएँ ज्ञानवर्धक एवं सहज ही अपने पाठकों का ध्यान आकर्षित कर लेती हैं । पत्रिका में समाविष्ट "आधुनिक विकास", "आत्मविश्वास", "मेरे बचपन के यार" एवं लेख में "महानगर में रहने के फायदे और नुकसान", "राष्ट्र के निर्माण में युवाओं की भूमिका" विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्जवल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

भवदीय,

व. लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष

सी.जी.ओ.कम्प्लेक्स,डी.एफ.ब्लॉक, साल्ट लेक,कोलकाता- 700 064
3rd MSO Building, 5th Floor, CGO Complex, DF Block, Salt Lake, Kolkata - 700 064.
Phone: (033) 2337-4916; FAX: (033) 2337-7854, e-mail: agauwestbengal2@cag.gov.in

सं. हि. प्रशा./2023-24/93

प्रधान निदेशक रक्षा - वाणिज्यिक
लेखापरीक्षा का कार्यालय, बेंगलोर-560001
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF
AUDIT DEFENCE- COMMERCIAL, BENGALURU-560001.

दिनांक - 26/10/2023

सेवा में,

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी / प्रशासन,
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
सी 25, 8वाँ तल बांद्रा कुर्ला कॉम्पलेक्स,
(पूर्व) मुंबई - 400051

विषयः- प्रशंसा पत्र।

महोदय /महोदया,

आपके कार्यालय की त्रैमासिक हिन्दी ई - पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' का 13 वां अंक की प्रति इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्त हुई है। पत्रिका में सम्मलित सभी रचनाएँ पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका के प्रकाशन के सफल प्रयास हेतु शुभकामनाएँ।

धन्यवाद,

E-NO/1307336/Admn
31 OCT 2023

भवदीया,
सारिता
हिन्दी अधिकारी

D:\Sandeep Kumar\प्रशंसा पत्र.docx

Rcd/p 31/10/23

भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले एवं हक)
तमिलनाडु, चेन्नई-18
टेलीफोन: 044-24324530 फैक्स: 044-24320562 Website : www.agae.tn.nic.in

सत्यमेव जयते

INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), TAMILNADU,
361, ANNA SALAI, CHENNAI-18
Phone: 044-24324530 Fax: 044-24320562
Website : www.agae.tn.nic.in

हिन्दी कक्ष/हिन्दी गृह पत्रिका रिव्यू/ 28974

दिनांक 26.10.2023

सेवा में, वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी (प्रशासन) कार्यालय महानिदेशक वाणिज्य लेखापरीक्षा मुंबई सी-25, ऑडिट भवन आठवां तल, बांद्रा , कुर्ला कंपलेक्स बांद्रा (पूर्व) मुंबई 400051	To, The Senior Audit Officer (Administration) Office of the Director General of Commercial Audit Mumbai C-25, Audit Bhavan 8th Floor, Bandra, Kurla Complex Bandra (East) Mumbai 400051

विषयः आपकी हिंदी गृह पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के तेरहवें अंक की पावती के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" का तेरहवां अंक प्राप्त हुआ। इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। ये अंक अपने कलेवर, साज- सज्जा, मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक और मनोहरी बन पड़ा है। पत्रिका में सम्मिलित सामग्री उच्च स्तर की है। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उच्च कोटि की अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्द्धक, मनोरंजक, पठनीय एवं सराहनीय है। इस अंक मे प्रकाशित **श्री सरोज प्रजापति द्वारा लिखित "आधुनिक विकास", श्री जय राम सिंह द्वारा लिखित "भारत की जी-20 अध्यक्षता : आयाम और महत्व", सुश्री पुजा साव द्वारा लिखित "महानगर में रहने के फायदे और नुकसान" श्री अरुण कुमार साव द्वारा लिखित "राष्ट्र के निर्माण में युवाओं की भूमिका" श्री इमरान खाटीक द्वारा लिखित "मेरे बचपन के यार" और सुश्री फातेमा हवेलीवाला द्वारा लिखित "कुछ खास दिल के पास है रहते" विशेष रूप से उल्लेखनीय है।** राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार में विभागीय रचनाकारों को उत्कृष्ट सृजनात्मक मंच प्रदान करने में आपकी इस पत्रिका की भूमिका महत्वपूर्ण बन रही है। यह बहुत ही सकारात्मक प्रयास है। पत्रिका भविष्य में और बेहतर प्रदर्शन करे, यही कामना है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

E-NO/1334484/Admin
08 NOV 2023

भवदीय

डॉ. सुभाषचंद यादव/हिंदी अधिकारी

विद्या 8/11/23

PS

भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा), छत्तीसगढ़, रायपुर
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
Office of Principal Accountant General (Audit), Chhattisgarh, Raipur

दिनांक
Date : 03.11.2023

E-No/1349387/Admin

प्रति,

15 NOV 2023

कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा मुंबई,
भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
सी-25,ऑडिट भवन 8वा तल,बांद्र (पू).मुंबई-400051

विषय:- हिंदी पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 13वें अंक संस्करण की पावती का प्रेषण ।
संदर्भ :- पत्र सं.डीजीसीए/प्रशा./का.प./2/256 दिनांक 13.10.2023

महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक हिंदी ई-पत्रिका **"लेखापरीक्षा ज्ञानोदय"** के 13वें अंक संस्करण प्राप्त हुआ । पत्रिका का यह अंक भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार । भेजी गई पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ पठनीय, रुचिकर एवं प्रेरणा दायक हैं । इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं ।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है । सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ ।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिन्दी कक्ष

पोस्ट – मांढर, जीरो प्वाइंट, रायपुर – 493 111 (छत्तीसगढ़)
Post - Mandhar, Zero Point, Raipur - 493 111 (Chhattisgarh)
फोन/Phone : 2582082 • फैक्स/Fax : 2582505 • ई-मेल/Email : agauchhattisgarh@cag.gov.in

कार्यालय
प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.)
हिमाचल प्रदेश, शिमला–171 003

OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E)
HIMACHAL PRADESH, SHIMLA-171 003

सं0 हि0क0/ले0व ह0/ पत्रिका समीक्षा/2023-24/181 दिनांक .11.2023

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी / प्रशासन,
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
मुंबई -400051

विषय: **आपके द्वारा प्रेषित कार्यालय की वार्षिक हिन्दी ई पत्रिका लेखापरीक्षा 'ज्ञानोदय' के 13 वें अंक की ई प्रति की पावती।**

महोदय,

उपरोक्त विषय पर आपके द्वारा प्रेषित कार्यालय की वार्षिक हिन्दी पत्रिका **'ज्ञानोदय' के 13 वें अंक** की ई प्रति प्राप्त हुई है जिसमें प्रकाशित सभी रचनाएं उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। हिन्दी भाषा की सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय है जिसके लिये आपका राजभाषा परिवार बधाई का पात्र है।

आशा है पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार – प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों एंव कर्मचारियों के मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकानाएँ।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी
(हिंदी कक्ष)

E No - 1412795

गार्टन कैसल बिल्डिंग, शिमला–171 003 दूरभाष: 0177–2652502 / 2651033, फैक्स: 0177–2651743
Gorton Castle Building, Shimla-171 003 Phone: 0177-2652502/2651033, Fax: 0177-2651743
E-mail:agaeHimachalpradesh@cag.gov.in